www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-1* *Issue-3* *October 2024***

कृषि सब्सिडी का किसानों की आय और उत्पादकता पर प्रभाव

प्रो0 वीर वीरेंद्र सिंह

प्राचार्य, जे एस हिंदू पीजी कॉलेज, अमरोहा

सारांश–

कृषि सब्सिडी का किसानों की आय और उत्पादकता पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। कृषि सब्सिडी, विशेषकर उर्वरक, बीज, और ऊर्जा सब्सिडी, ने किसानों की उत्पादन लागत को कम करके उनकी आय में वृद्धि की है। इसके अतिरिक्त, तकनीकी उन्नति और बेहतर संसाधनों की उपलब्धता ने कृषि उत्पादकता को भी बढ़ाया है। यह शोध पत्र सब्सिडी वितरण प्रणाली, किसानों की आय पर प्रभाव, और उत्पादन में बढ़ोतरी के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से विश्लेषण करता है। साथ ही, इसमें ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर कृषि सब्सिडी के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का भी अध्ययन किया गया है। सब्सिडी से किसानों की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन इसके कारण वित्तीय बोझ और पर्यावरणीय असंतुलन जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। अंत में, यह शोध पत्र नीति निर्माताओं के लिए सुझाव प्रस्तुत करता है, ताकि कृषि सब्सिडी को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके, जिससे न केवल किसानों की आय में वृद्धि हो, बल्कि उत्पादन क्षमता में भी सुधार हो। यह शोध पत्र 'कृषि सब्सिडी का किसानों की आय और उत्पादकता पर प्रभाव' विषय के अंतर्गत भारत की कृषि सब्सिडी नीतियों का विश्लेषण करता है और यह जानने का प्रयास करता है कि सब्सिडी कैसे किसानों की आर्थिक स्थिति और उत्पादन क्षमता को प्रभावित करती है।

मुख्य शब्दः कृषि सब्सिडी, किसानों की आय, कृषि उत्पादकता, उर्वरक सब्सिडी, बीज सब्सिडी, टिकाऊ कृषि, नीति सुधार।

परिचय–

कृषि सब्सिडी भारत में किसानों की आर्थिक स्थिति और कृषि उत्पादकता को सुदृढ़ करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सब्सिडी का मुख्य उद्देश्य किसानों को सस्ती दरों पर आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराना है, जिससे वे उत्पादन लागत को कम कर सकें और अपनी आय में वृद्धि कर सकें। भारत में कृषि सब्सिडी की नीतियाँ स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में शुरू हुईं और समय के साथ–साथ इनमें कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। कृषि सब्सिडी को एक ऐसी वित्तीय सहायता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसे सरकार किसानों को कृषि उत्पादन की लागत को कम करने के उद्देश्य से प्रदान करती है। इसका उद्देश्य किसानों को विभिन्न प्रकार के कृषि इनपुट्स जैसे उर्वरक, बीज, बिजली, सिंचाई, कीटनाशक आदि को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराना है। इससे कृषि उत्पादन की लागत कम होती है और किसानों की आय में वृद्धि होती है।[1]

कृषि सब्सिडी मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं–

1. उर्वरक सब्सिडीः यह सबसे प्रमुख कृषि सब्सिडी में से एक है। सरकार उर्वरकों की कीमत को नियंत्रित करती है और किसानों को उर्वरक कम कीमत पर उपलब्ध कराती है, जिससे उनकी उत्पादन लागत कम होती

है।

2. बीज सब्सिडीः सरकार किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज सस्ती दरों पर उपलब्ध कराती है, जिससे उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है। इससे किसानों को बेहतर उपज प्राप्त होती है।

3. ऊर्जा और सिंचाई सब्सिडीः इस प्रकार की सब्सिडी के अंतर्गत बिजली और सिंचाई के संसाधनों को सस्ती दरों पर किसानों तक पहुँचाया जाता है, जिससे उनकी सिंचाई लागत कम होती है और वे अपने खेतों की बेहतर सिंचाई कर सकते हैं।

इसके अलावा, कृषि सब्सिडी अन्य रूपों में भी उपलब्ध होती हैं, जैसे कि कीटनाशकों और मशीनरी की सब्सिडी। इन सब्सिडियों का मुख्य उद्देश्य किसानों को उत्पादन लागत में राहत देना और उन्हें आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है।

भारत में कृषि सब्सिडी का इतिहास 1960 के दशक से शुरू होता है, जब देश को खाद्य सुरक्षा की गंभीर चुनौती का सामना करना पड़ा। उस समय हरित क्रांति के रूप में एक बड़े आंदोलन की शुरुआत हुई, जिसका उद्देश्य देश की कृषि उत्पादकता को बढ़ाना था। हरित क्रांति के दौरान, सरकार ने किसानों को उन्नत बीज, उर्वरक, और सिंचाई संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सब्सिडियों का प्रयोग किया। इस नीति का मुख्य उद्देश्य किसानों को उत्पादन की बेहतर तकनीक अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना और देश में खाद्य उत्पादन को बढ़ावा देना था। सब्सिडियों के वितरण को अधिक लक्षित और प्रभावी बनाने के प्रयास किए गए। सरकार ने किसानों की आय में वृद्धि के साथ–साथ खाद्य उत्पादन को स्थिर बनाए रखने के उद्देश्य से सब्सिडी नीतियों में संशोधन किए।[2] आज की स्थिति में, कृषि सब्सिडी का प्राथमिक उद्देश्य किसानों की उत्पादन लागत को कम करना और उन्हें वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना है। यह नीतियाँ विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी हैं, जो उच्च लागत के कारण कृषि उत्पादन में कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

अध्ययन की आवश्यकता–

कृषि सब्सिडी का किसानों की आय और उत्पादकता पर गहरा प्रभाव पड़ता है, विशेषकर भारत जैसे कृषि–प्रधान देश में। हालांकि, सब्सिडी की प्रभावशीलता और वितरण की कार्यप्रणाली में समय–समय पर चुनौतियाँ आती रही हैं। यह अध्ययन आवश्यक है क्योंकि यह न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति पर सब्सिडी के प्रभाव को मापेगा, बल्कि यह भी जाँच करेगा कि सब्सिडी किस प्रकार कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक है। इसके अलावा, यह शोध यह स्पष्ट करेगा कि सब्सिडी नीतियों में सुधार कैसे किया जा सकता है, ताकि किसानों को अधिकतम लाभ मिले और देश की कृषि अर्थव्यवस्था स्थिरता की ओर अग्रसर हो सके।

कृषि सब्सिडी की संरचना और वितरण प्रणाली–

कृषि सब्सिडी भारत में कृषि उत्पादकता बढ़ाने और किसानों की आय में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण नीति उपकरण रही है। यह सब्सिडी किसानों को आवश्यक कृषि इनपुट्स जैसे उर्वरक, बीज, कीटनाशक, सिंचाई, और ऊर्जा को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए दी जाती है। कृषि सब्सिडी की संरचना और वितरण प्रणाली में केंद्र और राज्य सरकारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कृषि सब्सिडी के वितरण के लिए विभिन्न मॉडल अपनाए जाते हैं, जो नीतियों के कार्यान्वयन और किसानों तक सहायता पहुँचाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। प्रमुख सब्सिडी वितरण मॉडल निम्नलिखित हैं:[3]

1. प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण–

यह मॉडल वर्तमान में सबसे प्रमुख है, जिसमें किसानों को सीधे उनके बैंक खातों में सब्सिडी का भुगतान किया जाता है। इसका उद्देश्य पारदर्शिता बढ़ाना और बिचौलियों की भूमिका को समाप्त करना है। क्ठज् के माध्यम से किसानों को उर्वरक, बीज, और अन्य इनपुट्स पर सब्सिडी दी जाती है, जिससे उन्हें बाजार मूल्य से कम लागत पर आवश्यक संसाधन मिलते हैं। यह मॉडल केंद्र और राज्य दोनों सरकारों द्वारा अपनाया गया है।

2. वस्तु आधारित सब्सिडी–

इस मॉडल के अंतर्गत सब्सिडी सीधे उत्पादों की कीमतों में दी जाती है। जैसे कि उर्वरक और बीज की कीमतों को नियंत्रित करके उन्हें किसानों को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराया जाता है। इससे किसानों को तुरंत लाभ मिलता है और वे कम लागत पर अपनी खेती कर सकते हैं। यह मॉडल छोटे और सीमांत किसानों के लिए

विशेष रूप से लाभकारी होता है, जिन्हें खेती के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधन नहीं मिल पाते हैं।

3. उत्पादन आधारित सब्सिडी–

इस मॉडल के तहत किसानों को उनकी उत्पादन क्षमता के आधार पर सब्सिडी दी जाती है। उत्पादन बढ़ाने और उत्पादकता में सुधार के लिए यह मॉडल किसानों को प्रोत्साहित करता है। इसका उद्देश्य अधिक उपज देने वाली फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहित करना और किसानों की आय में वृद्धि करना है।

भारत में कृषि सब्सिडी वितरण के लिए केंद्र और राज्य सरकारों की कई योजनाएँ चल रही हैं। इनमें से कुछ प्रमुख योजनाएँ निम्नलिखित हैं–

1. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि–

यह केंद्र सरकार की एक प्रमुख योजना है, जिसके तहत छोटे और सीमांत किसानों को प्रतिवर्ष 6,000 रुपये की राशि दी जाती है। यह योजना किसानों की आर्थिक सहायता करने और उन्हें खेती में सुधार के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से चलाई जा रही है। इस योजना से किसानों की आय में वृद्धि होती है और वे कृषि के लिए आवश्यक इनपुट्स को आसानी से खरीद सकते हैं।[4]

2. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन–

इस योजना का उद्देश्य प्रमुख फसलों की उत्पादकता और उत्पादन बढ़ाना है। इसमें केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर किसानों को उर्वरक, बीज, और सिंचाई संसाधनों पर सब्सिडी प्रदान करती हैं। इस योजना के तहत किसानों को उन्नत तकनीक और संसाधनों का लाभ मिलता है, जिससे उनकी उत्पादकता में सुधार होता है।[5]

3. मुख्यमंत्री कृषि योजना (राज्य विशेष)–

कई राज्य सरकारें अपनी–अपनी कृषि योजनाएँ चलाती हैं, जैसे कि राजस्थान की मुख्यमंत्री कृषि योजना। इस योजना के तहत किसानों को उन्नत बीज, सिंचाई प्रणाली, और तकनीकी प्रशिक्षण पर सब्सिडी प्रदान की जाती है। राज्य सरकारें इन योजनाओं के माध्यम से किसानों की उत्पादकता बढ़ाने और उनकी आय में सुधार करने का प्रयास करती हैं।

कृषि सब्सिडी की संरचना और वितरण प्रणाली किसानों के लिए महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यह उनके लिए आवश्यक संसाधनों को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराती है। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा चलाए जा रहे सब्सिडी मॉडल किसानों की आय और उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक साबित हो रहे हैं।[6] सब्सिडी नीतियों में सुधार और प्रभावी वितरण प्रणाली के माध्यम से भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जा सकता है।

कृषि उत्पादकता में वृद्धि और सब्सिडी का संबंध–

कृषि उत्पादकता में वृद्धि और सब्सिडी के बीच एक मजबूत संबंध है। भारत में कृषि सब्सिडी का मुख्य उद्देश्य किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान कर उनकी कृषि उत्पादन क्षमता को बढ़ाना है। उर्वरक, बीज, और ऊर्जा सब्सिडी जैसे संसाधन किसानों को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे उनकी उत्पादन लागत कम होती है और वे अधिक उत्पादकता हासिल कर पाते हैं। उर्वरक सब्सिडी भारतीय कृषि नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह किसानों को उर्वरक की उच्च कीमतों से राहत दिलाने का एक प्रभावी साधन है। उर्वरक सब्सिडी के माध्यम से किसानों को उर्वरक सस्ती दरों पर उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे फसलों की वृद्धि और उपज में सुधार होता है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसान, जिनके पास सीमित संसाधन होते हैं, इस सब्सिडी से लाभान्वित होते हैं। उर्वरक का संतुलित उपयोग न केवल उत्पादन बढ़ाता है, बल्कि भूमि की उर्वरता को भी बनाए रखता है।[7]

बीज सब्सिडी भी कृषि उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्नत और उच्च गुणवत्ता वाले बीज किसानों को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे फसल की गुणवत्ता और मात्रा में वृद्धि होती है। बीज सब्सिडी से किसानों को अधिक उपज देने वाली किस्मों का लाभ मिलता है, जिससे उत्पादन लागत में कमी आती है और किसानों की आय में वृद्धि होती है। ऊर्जा सब्सिडी भी कृषि उत्पादन को सशक्त बनाती है। किसानों को सिंचाई और अन्य कृषि कार्यों के लिए सस्ती दरों पर बिजली और अन्य ऊर्जा संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं। इससे किसानों की सिंचाई लागत कम होती है, और वे अधिक प्रभावी ढंग से खेती कर पाते हैं।[8] ऊर्जा सब्सिडी से किसानों को फसल के उत्पादन में सुधार करने में मदद मिलती है, जिससे कुल कृषि उत्पादकता में वृद्धि होती है।

तकनीकी प्रगति और सब्सिडी का एक गहरा संबंध है, जो कृषि उत्पादकता में सुधार करने में सहायक सिद्ध होता है। तकनीकी प्रगति जैसे कि उन्नत कृषि यंत्र, ड्रिप सिंचाई प्रणाली, और आधुनिक कृषि तकनीकों का उपयोग सब्सिडी के माध्यम से किसानों तक पहुँचता है। इससे कृषि में दक्षता और उत्पादकता दोनों में सुधार होता है। सरकार की तकनीकी सब्सिडी योजनाओं ने किसानों को नई तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। इससे किसानों को न केवल कृषि उत्पादन बढ़ाने में मदद मिली है, बल्कि उनकी आय में भी वृद्धि हुई है।9 सब्सिडी के माध्यम से उपलब्ध कराई गई तकनीकी प्रगति ने पारंपरिक कृषि प्रणालियों को आधुनिक और अधिक प्रभावी बनाया है। इससे किसानों को कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करने का अवसर मिला है, जिससे उनका आर्थिक और सामाजिक विकास भी हुआ है।

कृषि सब्सिडी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था–

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां ग्रामीण अर्थव्यवस्था का अधिकांश हिस्सा कृषि पर निर्भर है। कृषि सब्सिडी ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास और समृद्धि लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सब्सिडी के माध्यम से सरकार किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करती है, जिससे उनकी उत्पादन लागत कम होती है और उनकी आय में वृद्धि होती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि सब्सिडी का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना और आर्थिक असमानताओं को कम करना है। उर्वरक, बीज, और ऊर्जा पर दी जाने वाली सब्सिडी ने किसानों की कृषि उत्पादकता में महत्वपूर्ण वृद्धि की है, जिससे उनकी आय में सुधार हुआ है। इससे न केवल किसानों की कृषि उत्पादकता में सुधार हुआ है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवन गुणवत्ता भी बेहतर हुई है।[10] सब्सिडी न केवल व्यक्तिगत किसान को लाभ पहुंचाती है, बल्कि सामुदायिक स्तर पर भी विकास की संभावनाओं को प्रोत्साहित करती है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र आर्थिक विकास संभव हो पाता है।

कृषि सब्सिडी ने ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जब किसानों की आय बढ़ती है, तो वे कृषि से जुड़े अन्य कार्यों, जैसे कि प्रसंस्करण, भंडारण, और विपणन में भी निवेश करते हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होते हैं, जिससे बेरोजगारी की समस्या को हल करने में मदद मिलती है। सब्सिडी से संचालित कृषि गतिविधियों ने ग्रामीण युवाओं को भी रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं, जो गांवों से शहरों की ओर पलायन करने की दर को कम करने में सहायक रही है। कृषि सब्सिडी ने किसानों के जीवन स्तर में भी उल्लेखनीय सुधार किया है। उत्पादन लागत में कमी और कृषि उत्पादकता में वृद्धि से किसानों की आय में वृद्धि हुई है। इससे वे अपने परिवार के लिए बेहतर जीवनशैली, शिक्षा, और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित कर पाते हैं। इसके अलावा, सब्सिडी ने कृषि में नवाचार और नई तकनीकों के उपयोग को भी प्रोत्साहित किया है, जिससे किसानों की कार्य क्षमता में सुधार हुआ है। सब्सिडी से प्राप्त आर्थिक सहायता ने किसानों को दीर्घकालिक आर्थिक सुरक्षा प्रदान की है, जिससे उनके जीवन स्तर में व्यापक सुधार हुआ है। कृषि सब्सिडी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सब्सिडी न केवल किसानों की आय और उत्पादकता को बढ़ाती है, बल्कि रोजगार सृजन और ग्रामीण विकास को भी प्रोत्साहित करती है। इसके माध्यम से किसानों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है, और ग्रामीण क्षेत्रों में समग्र आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ी हैं।[11] इस प्रकार, कृषि सब्सिडी को ग्रामीण विकास के एक आवश्यक घटक के रूप में देखा जा सकता है, जो देश की समग्र आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

कृषि सब्सिडी के आर्थिक और सामाजिक प्रभाव–

कृषि सब्सिडी न केवल भारतीय किसानों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती है, बल्कि इसका व्यापक सामाजिक प्रभाव भी होता है। सब्सिडी का उद्देश्य किसानों की आय और उत्पादकता में वृद्धि करना है, जिससे उनकी जीवनशैली में सुधार हो और उनके सामाजिक स्तर में भी वृद्धि हो। कृषि सब्सिडी ने भारतीय किसानों की सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उर्वरक, बीज, और ऊर्जा सब्सिडी के माध्यम से किसानों की उत्पादन लागत में कमी आई है, जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है। जब किसानों की आय में वृद्धि होती है, तो वे अपने परिवारों को बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, और जीवनशैली प्रदान करने में सक्षम होते हैं।[12] यह सब्सिडी उन्हें समाज में अधिक सम्मानित और सशक्त स्थान प्राप्त करने में मदद करती है।

इसके अतिरिक्त, सब्सिडी ने छोटे और सीमांत किसानों को आत्मनिर्भर बनने में भी सहायता की है। ग्रामीण क्षेत्रों में किसान जो आर्थिक रूप से कमजोर होते थे, वे अब सब्सिडी के माध्यम से अपने उत्पादन को बढ़ा पा रहे हैं। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है, बल्कि समाज में उनका सामाजिक दर्जा भी बेहतर

हुआ है। यह सब्सिडी किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है, जिससे वे पारंपरिक कृषि प्रणाली से हटकर नई और उन्नत तकनीकों की ओर बढ़ रहे हैं। इस परिवर्तन ने किसानों की सामाजिक पहचान और प्रतिष्ठा को मजबूत किया है।

हालांकि कृषि सब्सिडी ने किसानों को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया है, लेकिन इससे कुछ चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। इनमें सबसे बड़ी चुनौती यह है कि सब्सिडी वितरण में अक्सर पारदर्शिता की कमी देखी जाती है। कई बार बिचौलियों के माध्यम से सब्सिडी का लाभ सही किसानों तक नहीं पहुँचता है, जिससे सब्सिडी का सही उपयोग नहीं हो पाता। दूसरी चुनौती यह है कि कई किसानों को सब्सिडी के लाभ के बारे में पूरी जानकारी नहीं होती है। इस जानकारी के अभाव में वे अपने अधिकारों का लाभ उठाने में असमर्थ रहते हैं।[13] इसके अलावा, सब्सिडी का अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग भी कृषि के पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बनता है, जैसे कि उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से भूमि की उर्वरता में कमी आना और जल संसाधनों का दुरुपयोग होना। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि सब्सिडी वितरण प्रणाली को अधिक पारदर्शी और उत्तरदायी बनाया जाए। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण जैसी नीतियों के माध्यम से सब्सिडी का लाभ सीधे किसानों तक पहुँचना चाहिए, जिससे बिचौलियों की भूमिका समाप्त हो सके। इसके अलावा, किसानों को सब्सिडी के लाभ और उनके सही उपयोग के बारे में जानकारी देने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

साथ ही, सब्सिडी नीतियों का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए, ताकि पर्यावरण पर इसके दुष्प्रभाव को कम किया जा सके। सतत कृषि के सिद्धांतों को अपनाकर, सब्सिडी नीतियों को अधिक पर्यावरणीय अनुकूल बनाया जा सकता है। यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि सब्सिडी का उपयोग दीर्घकालिक कृषि स्थिरता को बढ़ाने के लिए किया जाए।

कृषि सब्सिडी की दीर्घकालिक स्थिरता–

कृषि सब्सिडी का मुख्य उद्देश्य किसानों की आय में वृद्धि करना और उनकी कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देना है। हालांकि, यह आवश्यक है कि कृषि सब्सिडी दीर्घकालिक रूप से स्थिर हो ताकि वह किसानों को निरंतर लाभ पहुंचा सके और कृषि क्षेत्र की आर्थिक स्थिरता को सुनिश्चित कर सके। कृषि सब्सिडी की दीर्घकालिक स्थिरता को ध्यान में रखते हुए इसकी मौजूदा नीतियों की समीक्षा और सब्सिडी सुधार के लिए सुझाव एवं नीति परिवर्तन की आवश्यकता है। भारत में मौजूदा कृषि सब्सिडी नीतियों का मुख्य जोर उर्वरक, बीज, और सिंचाई सब्सिडी पर है। वर्तमान में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से सब्सिडी सीधे किसानों के खातों में भेजी जाती है। यह प्रक्रिया पारदर्शिता और किसानों को सीधा लाभ देने में प्रभावी रही है। मौजूदा नीतियों ने किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों के लिए।14 हालांकि, इन नीतियों में कुछ कमियाँ भी देखी गई हैं। कई बार, सब्सिडी का उचित वितरण नहीं हो पाता है, जिससे केवल कुछ विशिष्ट वर्गों को ही लाभ मिलता है। इसके अलावा, अत्यधिक उर्वरक सब्सिडी ने भूमि की उर्वरता पर नकारात्मक प्रभाव डाला है और पर्यावरणीय असंतुलन का खतरा बढ़ाया है। मौजूदा नीतियों की समीक्षा में यह स्पष्ट होता है कि सब्सिडी का उद्देश्य उत्पादकता को बढ़ावा देना है, लेकिन यह सुनिश्चित नहीं हो पाया है कि यह दीर्घकालिक रूप से स्थिर हो और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ हो।

कृषि सब्सिडी की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए सुधार आवश्यक हैं। सबसे पहले, मौजूदा सब्सिडी नीतियों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए उन पर ध्यान देना होगा, जो वास्तविक जरूरतमंद किसानों तक लाभ पहुँचाने में सक्षम हों। इसके लिए एक लक्षित सब्सिडी मॉडल अपनाना आवश्यक है, जिसमें छोटे और सीमांत किसानों को प्राथमिकता दी जाए। सब्सिडी का वितरण ऐसी प्रणाली के माध्यम से होना चाहिए, जो भ्रष्टाचार और बिचौलियों की भूमिका को समाप्त करे। दूसरा, सब्सिडी नीतियों को पर्यावरणीय स्थिरता के साथ जोड़ना जरूरी है। उर्वरकों और कीटनाशकों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के लिए जैविक और टिकाऊ कृषि को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इस दिशा में सरकार को जागरूकता अभियानों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को टिकाऊ कृषि प्रणालियों के प्रति शिक्षित करना होगा। तीसरा, सब्सिडी में दीर्घकालिक सुधार के लिए नीति परिवर्तन आवश्यक है, जिसमें सब्सिडी केवल कृषि उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से न होकर, कृषि विविधीकरण और आय के वैकल्पिक स्रोतों को बढ़ावा देने की दिशा में होनी चाहिए। मछली पालन, पशुपालन, और बागवानी जैसी वैकल्पिक आय स्त्रोतों को भी सब्सिडी के अंतर्गत लाया जाना चाहिए।[15]

कृषि सब्सिडी की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा नीतियों की समीक्षा और उनमें सुधार आवश्यक है। अधिक पारदर्शी और लक्षित सब्सिडी वितरण प्रणाली, पर्यावरणीय संतुलन को ध्यान में रखते हुए टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना, और सब्सिडी नीतियों का व्यापक दृष्टिकोण अपनाना जरूरी है। सब्सिडी सुधारों और नीति परिवर्तन के माध्यम से ही दीर्घकालिक स्थिरता प्राप्त की जा सकती है, जो किसानों के जीवनस्तर और कृषि क्षेत्र की समृद्धि के लिए आवश्यक है।

कृषि सब्सिडी का भविष्य और संभावित नीतियाँ–

कृषि सब्सिडी का भविष्य और संभावित नीतियाँ भारतीय कृषि की स्थिरता और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान में, कृषि सब्सिडी किसानों की आय बढ़ाने और उत्पादकता को सशक्त करने में एक केंद्रीय भूमिका निभा रही है, लेकिन भविष्य में सब्सिडी की संरचना और नीति निर्धारण के नए दृष्टिकोण आवश्यक हैं। भारत में कृषि सब्सिडी का विकास समय के साथ–साथ बदलता रहा है। जहां पहले केवल उर्वरक और सिंचाई पर सब्सिडी दी जाती थी, अब यह बीज, ऊर्जा, और जैविक खेती जैसे विभिन्न क्षेत्रों तक विस्तारित हो गई है। लेकिन कृषि सब्सिडी की दीर्घकालिक स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए नीति निर्धारण में कुछ नए दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

सबसे पहले, सब्सिडी वितरण में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने के लिए डिजिटलाइजेशन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण को और अधिक सशक्त किया जाना चाहिए, ताकि बिचौलियों की भूमिका को समाप्त कर सब्सिडी का सीधा लाभ किसानों तक पहुँचाया जा सके। डिजिटल माध्यम से सब्सिडी वितरण से न केवल भ्रष्टाचार कम होगा, बल्कि सब्सिडी का सही उपयोग भी सुनिश्चित होगा। दूसरा, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय स्थिरता को ध्यान में रखते हुए सब्सिडी नीतियों में बदलाव किया जाना चाहिए। टिकाऊ कृषि और जल–संरक्षण प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी का प्रयोग किया जा सकता है। जैविक खेती, सूक्ष्म सिंचाई, और नवीन ऊर्जा स्रोतों पर दी जाने वाली सब्सिडी के माध्यम से किसानों को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।[16]

कृषि सब्सिडी ने किसानों को आत्मनिर्भर बनने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसान, जिन्हें बाजार में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, वे सब्सिडी के माध्यम से अपनी कृषि उत्पादकता को बढ़ा पाए हैं। सब्सिडी न केवल उनके उत्पादन की लागत को कम करती है, बल्कि उन्हें बेहतर तकनीक और संसाधनों तक पहुंच प्रदान करती है। इससे वे आत्मनिर्भर बनने की दिशा में कदम उठा सकते हैं। आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिए कृषि सब्सिडी की नीतियों को किसानों की आत्मनिर्भरता के साथ जोड़ा जा सकता है। सब्सिडी का मुख्य उद्देश्य किसानों को केवल आर्थिक सहायता प्रदान करना नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें इतना सक्षम बनाना चाहिए कि वे कृषि के विभिन्न पहलुओं में आत्मनिर्भर बन सकें। इसके लिए सब्सिडी को कृषि विविधीकरण, जैसे कि बागवानी, पशुपालन, और कृषि आधारित उद्योगों में भी लागू किया जाना चाहिए। इससे किसान अपनी आय के अतिरिक्त स्रोत उत्पन्न कर सकेंगे, जिससे उनकी आर्थिक स्थिरता बढ़ेगी।

निष्कर्ष–

कृषि सब्सिडी भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों की आय में वृद्धि करना, उनकी उत्पादन लागत को कम करना और कृषि उत्पादकता को बढ़ावा देना है। उर्वरक, बीज, सिंचाई, और ऊर्जा पर दी जाने वाली सब्सिडी ने किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है, विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों के लिए यह अत्यधिक लाभकारी सिद्ध हुई है। सब्सिडी ने न केवल कृषि उत्पादन को बढ़ाया है बल्कि किसानों की सामाजिक स्थिति में भी सुधार किया है, जिससे वे बेहतर जीवन स्तर का आनंद ले रहे हैं। कृषि सब्सिडी की प्रभावशीलता को सुनिश्चित करने के लिए इसकी संरचना और वितरण प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण प्रणाली ने सब्सिडी के वितरण में पारदर्शिता और दक्षता को बढ़ाया है, लेकिन अब भी सब्सिडी वितरण में कई चुनौतियाँ हैं। भ्रष्टाचार, बिचौलियों की भूमिका, और पारदर्शिता की कमी सब्सिडी के सही उपयोग में बाधा डालती हैं। इसके अलावा, उर्वरक सब्सिडी का अत्यधिक उपयोग पर्यावरणीय असंतुलन का कारण बनता है, जो दीर्घकालिक कृषि स्थिरता के लिए एक चुनौती है।

भविष्य में, कृषि सब्सिडी की नीतियों को अधिक लक्षित, पारदर्शी और पर्यावरण–संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय स्थिरता को ध्यान में रखते हुए सब्सिडी नीतियों में सुधार

किया जाना चाहिए। टिकाऊ कृषि को प्रोत्साहन देने के लिए जैविक खेती, सूक्ष्म सिंचाई, और नवीन ऊर्जा स्रोतों पर सब्सिडी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। साथ ही, किसानों को आधुनिक तकनीक और कृषि के नए दृष्टिकोणों के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें और सब्सिडी पर निर्भरता कम हो सके। अंततः, कृषि सब्सिडी का भविष्य इस पर निर्भर करेगा कि किस प्रकार नीतियों का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है और किसानों की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप इसे विकसित किया जाता है। सब्सिडी को दीर्घकालिक स्थिरता और कृषि के व्यापक विकास को ध्यान में रखते हुए एक रणनीतिक उपकरण के रूप में उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे भारतीय किसान आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो सकें और कृषि क्षेत्र में समृद्धि बनी रहे।

संदर्भ–

1. शर्मा, आर. एस. (2010). भारतीय कृषि और सब्सिडी नीतियाँ, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 120।
2. वही, पृ. 132।
3. सिंह, ए. (2010). कृषि सब्सिडी और कृषि उत्पादन में सुधार, भारतीय कृषि समीक्षा, 35(4), 55–56।
4. जनसत्ता, 13 मई, 2020।
5. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा पोर्टल, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग भारत सरकार ;ीजजचेरूध्ध्दर्ध्दण्हिवअण्पदध्चवतजंसध्दर्ध्.बिजद्ध।
6. कृषक जगत, 12 अगस्त 2023।
7. गुप्ता, डी. (2018). कृषि और पर्यावरणीय चुनौतियाँः सब्सिडी का प्रभाव, एशियाई पब्लिकेशन हाउस, मुंबई, पृ. 139।
8. वही, पृ. 132।
9. चौहान, आर. (2018). कृषि सब्सिडी और किसान सशक्तिकरण, भारत का आर्थिक पुनरावलोकन, 33(6), 65–66।
10. गुप्ता, डी. (2021). कृषि सब्सिडी का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव, पटना, शांति प्रकाशन, पृ. 56।
11. जोशी, आर. (2017). कृषि सब्सिडीः अतीत, वर्तमान और भविष्य. नया युग प्रकाशन, पुणे, पृ. 45.
12. वही, पृ. 58।
13. यादव, पी. (2017). भारत की कृषि अर्थव्यवस्थाः सब्सिडी और उत्पादकता, नई दिल्ली, भारत प्रकाशन, पृ. 87।
14. वही, पृ. 93।
15. कुमार, पी. (2015). कृषि सब्सिडी और भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था. भारतीय आर्थिक अध्ययन जर्नल, 28(5), 80–81।
16. गुप्ता, डी. (2021). कृषि सब्सिडी का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव, पटना, शांति प्रकाशन, पृ. 139।

Cite this Article-

प्रो0 वीर वीरेंद्र सिंह, "कृषि सब्सिडी का किसानों की आय और उत्पादकता पर प्रभाव", *Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:10, October 2024.*

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i3002

Published Date- 03 October 2024